दुनिया से खत्म हो जाएँगी 2500 भाषाएँ

संध्या रायचौधरी

भाषा का विलुप्त होना मनुष्य जाति के लिए बेहद चिन्ताजनक बात है। जिस तरह मछली जल में रहती है, उसी तरह मनुष्य भाषा में। लेकिन भाषाओं की मौत फटाफट हो रही है। बीती सदी में कोई ऐसा दशक नहीं बीता, जिसमें किसी भाषा का अन्त न हुआ हो। इसी दशक में अण्डमान की एक भाषा 'बो' का अन्त, इसे बोलने वाली एकमात्र महिला बोआ सीनियर की मृत्यु के साथ हुआ। इसके कुछ ही दिन बाद यूनेस्को ने भाषा एटलस जारी किया, जिसके मुताबिक दुनिया की करीब 6000 भाषाओं में से 2500 के लुप्त होने की आशंका है। भारत में सर्वाधिक 196 भाषाओं पर लुप्त होने का खतरा है। दूसरा स्थान अमेरिका का है जहाँ की 192 भाषाओं पर यह संकट है। यूनेस्को के अनुसार दुनिया में 199 भाषाएँ ऐसी हैं, जिन्हें बोलने वाले 10-10 से भी कम लोग हैं।

भाषा की मौत का अर्थ गहरा है। इसके साथ उससे जुड़ी संस्कृति का भी अन्त हो जाता है, मनुष्यों की विशिष्ट पहचान गुम हो जाती है। भाषा का मरना दुनिया की विविधता पर भी चोट है। यह हमारे एकरंगी विश्व की ओर जाते कदम का सूचक है। दुनिया के भाषा विज्ञानी इसे लेकर साँसत में हैं। वैश्वीकरण के बाद भाषाओं के विलोप में काफी तेज़ी आई है। आज दुनिया की केवल चार भाषाएँ करीब 97 फीसदी लोगों द्वारा बोली जाती हैं। इससे उलट, दुनिया की 96 फीसदी भाषाएँ केवल तीन फीसदी आबादी द्वारा बोली जाती हैं।

भाषाओं के विलुप्त होने के कारणों में मनुष्यों का प्रवास, सांस्कृतिक विलोपन, भाषा के प्रति नज़रिए में बदलाव, सरकारी नीतियाँ, शिक्षा का माध्यम, रोज़गार आदि अहम हैं। वैश्वीकरण के जिस दौर में हम आज आ पहुँचे हैं, वहाँ एक ही तरह का खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना, एक ही तरह की ज़िन्दगी और एक ही तरह की भाषा का ज़ोर है।

यह लेख *स्रोत फीचर्स* के जनवरी 2017 अंक में प्रकाशित 'दुनिया से खत्म हो जाएँगी 2500 भाषाएँ' लेख का सम्पादित अंश है।